डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-३३

लंकायुद्ध, सीताका उद्धार-१

अनुवाद - मनीश श्रीवास्तव

सुग्रीव ने वानरों को एकत्र होने का आदेश दिया। असंख्य वानरों का झुण्ड गुफाओं से और पर्वतों की चोटियों से बाहर आया। वे पेड़ों से, नदी- किनारों से आए। सभी सुग्रीव के साथ प्रसन्नचित, उत्साहित थे और उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार थे। सुग्रीव, लक्ष्मण और लाखों विशाल - बलशाली वानरों से घिरे राम दक्षिण की ओर बढ़ गए।

वाल्मीकि की कथा की अद्वितीयता सीता को लंका से सुरक्षित निकालने के लिए राम का दृढ़ संकल्प है। उनका अपनी पत्नी के लिए अथाह प्रेम था और उनके पास एक ऐसा निष्ठावान भाई था जो उनकी सहायता के लिए तत्पर था। सुग्रीव के साथ हुई मित्रता के माध्यम से, उन्होंने एक सेना बनाई जो लक्ष्य के लिए स्पष्ट रूप से प्रतिबद्ध थी, हालांकि लक्ष्य को प्राप्त करने के माध्यमों को पूरी तरह से परिभाषित नहीं किया गया था। राम बस इतना जानते थे कि सीता जीवित हैं और वह लंका में रावण की बंदी रूप में हैं। लंका को किलाबंद किया गया था और सीता को कुछ दुष्ट दानव जैसे जीवों की निगरानी में रखा गया था।

राम को लंका की किलेबंदी के बारे में और जानकारी चाहिए थी, वे प्रवेश मार्गों के बारे में और अधिक जानना चाहते थे। 'मैं एक पुल के द्वारा सागर पार कर सकता हूँ', उन्होंने दावा किया 'मैं इस सागर को अपने तीरों से सुखा सकता हूँ! किन्तु किलेबंदी को तोड़ना कितना कठिन है? फाटकों की सुरक्षा कैसे की गयी है? प्राचीरें कितनी मजबूत हैं?' राम ने हनुमान से अनुरोध किया कि उन्होंने लंका में जो कुछ भी पता लगाया, उसे विस्तार से बताएं।

"लंका अत्यंत सुन्दर और वैभवशाली है, जहां हाथियों और रथों का एक भव्य प्रदर्शन होता है। सुडौल सशक्त राक्षस पूरे द्वीप में प्रत्येक स्थान पर देखे जा सकते हैं। शक्तिशाली ठोस इस्पात की सलाखों से बने चार प्रवेश द्वार हैं। ये स्वचलित यांत्रिक द्वार घुसपैठ रोकने के लिए चट्टानों की वर्षा कर सकते हैं। प्रत्येक द्वार सैकड़ों वज्रों से सुसज्जित है जिनका उपयोग आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षाकर्मियों के द्वारा किया जा सकता है। मणि और रत्न जड़ित एक सुनहरी दीवार नगर को घेरे हुए है। दीवार के चारों ओर मगरमच्छ और अन्य घातक जंतुओं से भरी एक व्यापक और गहरी ठंडे पानी की खाई है! प्रवेश कठिन है!' 'चार यंत्रचलित पुल प्रवेश द्वारों के लिए रास्ता बनाते हैं। हथियारों और सुरक्षाकर्मियों को रखने के लिए बड़े पैमाने पर प्राचीरों का निर्माण किया गया है। मुख्य प्रवेश द्वार का पुल सबसे सशक्त है। यह सुदृढ़ सुनहरे स्तंभों पर आसीन है। आत्ममुग्ध रावण, जो सदैव अपने शत्रुओं के सर्वनाश के लिए उत्सुक रहता है, अपनी सेनाओं और उपकरणों की देखरेख स्वयं करता है। समुद्र के बीच में स्थित इस द्वीप को घने जंगलों और गहरी नदियों से प्राकृतिक संरक्षण प्राप्त है। इसके अतिरिक्त, नगर एक पर्वत की चोटी के एक पथरीले भूभाग पर बनाया गया है!'

'पूर्वी द्वार तीरों और तलवारों से सुजज्जित राक्षसों की एक अजेय सेना द्वारा संरक्षित है। दक्षिणी द्वार पर चार प्रकार की शक्तिशाली सेनाएं तैनात हैं- घुड़सवार, हाथी सवार, रथ पर सवार और पैदल सैनिक। पश्चिमी द्वार पर तलवार एवं वज्र युद्ध में अच्छी तरह से प्रशिक्षित दस हजार राक्षसों द्वारा पहरा दिया जाता है। सबसे सशक्त उत्तरी द्वार घोड़ों और रथों पर सवार अत्यधिक कुशल योद्धाओं की एक पूरी सेना द्वारा संरक्षित है। और नगर के केंद्र में, एक लाख सैनिकों की कमान देखी जा सकती है, जो सभी सैन्य कौशल में अपराजेय हैं!'

हनुमान ने लंका प्रवेश की अपनी उपलब्धियों को बताया। 'इन सभी बाधाओं को पार कर मैंने पुल और द्वार के माध्यम नगर में प्रवेश किया! नगर में प्रवेश करते ही मैंने, अनगिनत राक्षसों को मार गिराया। मैं अंततः शहर के कुछ भागों को जलाने में सफल रहा। यह संभव है, हमें केवल सागर पार करना है! लंका नगरी को अंगद, द्विविदा, मैंद, जाम्बवंत,

पनासा, नल और नील के द्वारा जीता जा सकता है। वे जंगलों को ध्वस्त कर देंगे और पर्वतों को चकनाचूर कर देंगे। वे दीवारों को लांघ राक्षसों को नष्ट कर माता सीता को सुरक्षित निकाल लाएंगे। कृपया उन्हें कार्य के लिए तैयार होने का आदेश दें। आपको संभवतः पूरी सेना की आवश्यकता ही न पड़े!'

राम अपनी धनुर्विद्या के कौशल के बारे में पूर्णतः आश्वस्त थे। 'मैं लंका की रक्षात्मक व्यवस्था की कल्पना कर सकता हूँ, लेकिन मेरा ये वचन है कि मैं रावण का वध करने में सफल होऊँगा। हे सुग्रीव, यही अवसर है! आज उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र का आरोहण है। कल हस्त नक्षत्र का योग है। मुझे मेरे अंगों से सफलता के संकेत मिल रहे हैं, मेरी आंख फड़फड़ा रही है! ऊपर सूर्य चमक रहा है। यह अपराह्न का मुहूर्त अपना अभियान शुरू करने के लिए शुभ है!'

राम ने आगे कहा : 'नील को एक लाख वानरों के साथ सेना के अग्रिम भाग का नेतृत्व करना चाहिए। वो मार्ग खोजेंगे और उसकी जांच करेंगे। उन्होंने आदेश दिया : 'हे नील! कृपया एक ऐसा रास्ता खोजने की कोशिश करें जहां हमें फल, जड़ें, शहद और पानी मिल सके। कृपया ध्यान से जांच करें, हमारे कूच की प्रत्याशा में राक्षसों ने फलों को विषैला न कर दिया हो। हमेशा सतर्क रहें। कृपया चारों ओर देखें, खाइयों और घने पेड़-पौधों के नीचे शत्रु न छुपे हों। यह कार्य निर्बलों के लिए नहीं है। केवल उन लोगों को ही लें जो मजबूत कद-काठी के हों और जिनमें अधिक सहनशक्ति हो, जो कठिनाई को सहन कर सकें!'

हमारी सेना ऐसे कूच करेगी जैसे सागर में ज्वार उठता हो। विशाल कद काठी वाले वानरों का झुण्ड युद्ध का व्यूह रचेगा। पर्वत जैसे विशाल गज, भीमकाय गवाया और गावाका के झुंड सेना का नेतृत्व करेंगे। वानर प्रमुख सेना के दाहिने पार्श्व और अजेय गंधमदाना बाएं पार्श्व की रक्षा करेंगे। मैं हनुमान के कांधों पर सवार बीच में चलूँगा। लक्ष्मण अंगद के कांधों पर सवार होंगे। शक्तिशाली जाम्बवंत, सुषेण और वेगादरसी सेना की अंतिम छोर की देखरेख करेंगे!'

सुग्रीव ने वानरों को एकत्र होने का आदेश दिया। असंख्य वानरों का झुण्ड गुफाओं से और पर्वतों की चोटियों से बाहर आया। वे पेड़ों से, नदी- किनारों से आए। सभी सुग्रीव के साथ प्रसन्नचित्त, उत्साहित थे और उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार थे। सुग्रीव, लक्ष्मण और लाखों विशाल - बलशाली वानरों से घिरे राम दक्षिण की ओर बढ़ गए। वानर चंचल थे और पेड़ों से फल और शहद खाते, खेल-कूद करते अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे। वे सभी एक साथ 'रावण और निशाचरों का नाश हो' का युद्ध घोष करते आगे बढ़ रहे थे। वानरों का लक्ष्य तय था! वे भी अपने कट्टर शत्रु राक्षसों से सुरक्षा चाहते थे!

सेना के आगे बढ़ते ही नील, रस्व और कुमुदा ने रास्ता साफ कर दिया। सुग्रीव, लक्ष्मण और राम मध्य में चल रहे थे। अपने झुंड के साथ बाहुबली सतबली मुख्य रक्षक के रूप में थे। बायीं ओर केसरी और पनासा एवं दाहिनी ओर गज और अर्का थे। सुषेण और जाम्बवंत ने सेना का पृष्ठ भाग संभाला हुआ था। नील ने सैनिकों को वन पथ पर रहने के लिए अनुशासित किया और उन्हें रास्ते में पड़ने वाले आबादी वाले गांवों में दूर भटकने से रोका। दारिमुख, प्रजंघ, जंभ और रस्व आगे बढ़ते हुए उद्घोषकों की भूमिका में थे। राम के नेतृत्व में एक महासागर का ज्वार दक्षिण की ओर बढ़ रहा था!

वाल्मीकि के लक्ष्मण एक निष्ठावान भाई हैं। राम के विपरीत वे यथार्थवादी एवं व्यावहारिक हैं। उन्हें राम का वानरों से इतना प्रेम इस उद्देश्य पथ से भ्रमित करता दिखाई दिया था। किन्तु इस नए बदलाव ने उनमें ऊर्जा का संचार किया, वे सेना का समर्थन करना चाहता थे। सांझ होते ही लक्ष्मण बोले : 'मैं पृथ्वी और आकाश दोनों पर शुभ शगुन देख रहा हूँ जो हमारे प्रयासों की सफलता का संकेत देता है। एक कोमल और सुखद वायु प्रवाह हमें हमारी दिशा में आगे बढ़ा रहा है! पशु और पक्षियों का अभिन्न सौहार्द्रपूर्ण संगीत सुनाई दे रहा है! ये सभी स्थिरता और प्रसन्नता का संकेत देते हैं!'

'शुक्र ग्रह आकाश में टिमटिमा रहा है और अपने सात पवित्र तारों के तारामंडल के साथ ध्रुव-तारा हमारी सेना को आशीर्वाद दे रहा है। हमें वशिष्ठ के साथ दक्षिणी आकाश में उज्ज्वल तारे त्रिशंकु एवं इक्ष्वाकु दिखाई दे रहे हैं। अपने कुनबे का सबसे महत्वपूर्ण शगुन, विशा नक्षत्र, बिना किसी हस्तक्षेप के चमक रहा है। राक्षसों का मूल नक्षत्र, निरर्ति तारे के साथ धूमकेतु से घिरा हुआ है! वृक्ष फलों से लदे हुए हैं। झीलों में पानी मीठा और साफ है। वानर सेना प्रसन्नचित्त है। प्रसन्नता उनके मुखों पर है। ये संकेत उन दिनों का है जब देवताओं ने प्राचीनकाल में तारकासुर से युद्ध किया था! हे प्रभु! आपको इससे प्रसन्न होना चाहिए!'

वानर सेना आगे बढ़ी। उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक पर्वतों और नदियों को पार किया। उस धूल से उठी आंधी ने समस्त आकाश को ढंक लिया। वे दक्षिण की ओर बढ़ते बादलों की एक पंक्ति से प्रतीत हो रहे थे। सारे वानर 'हो हो हो... हम आ रहे हैं... ध्यान रहे। हमें पकड़ा नहीं जा सकता! हो हो हो!' का शोर मचा रहे थे। कुछ वानर अंगड़ाई लेते उत्साहपूर्वक अपनी पूँछ पटक रहे थे। विशालकाय वानरों के हाथों में चट्टानें थीं वे युद्ध के लिए तैयार थे! वानरों का एक गुट लताओं को हटाता, वृक्ष उखाड़ता रास्ता बना रहा था!

वानर सेना दिन-रात चलती गयी। सुग्रीव इन सबके मध्य में थे! वे अपने मित्र राम का ऋण उतार रहे थे!■